शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

गांधी विचार और अन्ना का आन्दोलन : एक अध्ययन

कु. नेहा नेमा (शोधार्थी)
अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

समाज को जड़ता से मुक्त करने में समाज सेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे समाज के प्रवाह से भिन्न दृष्टि से युक्त हो समाज के अंतिम व्यक्ति की भलाई के लिए दिन-रात प्रयत्न करते हैं। भूतकाल में ऐसे अनेक प्रयोग किये गए हैं, जब राजनीति के माध्यम से समाज की जड़ता को तोड़ने की कोशिशे की गयीं। महात्मा गांधी का आजादी के लिए किया गया संघर्ष वास्तव में सामाजिक चेतना जाग्रत करने के लिए था। आजादी के बाद जब राजनीतिक शक्ति समस्याओं को हल करने में असहाय नजर आने लगी तब लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रांति का नारा दिया और सत्ता से समाज परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया। जब एक बार फिर सत्ताधीशों ने निरंकुश होकर अपने गलत कार्यों को सही ठहराना शुरू किया, तब अन्ना हजारे ने अपने साथियों के साथ न सिर्फ सरकार को हिलाया बल्कि जनता में एक नए प्रकार की चेतना का संचार किया। प्रस्तुत शोध पत्र में गांधी विचारों के परिप्रेक्ष्य में अन्ना हजारे के आन्दोलन का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

अन्ना हजारे के आन्दोलन में युवाओं की हिस्सेदारी ने जाति-धर्म-प्रान्त की दीवारें तोड़ दी। सरकार को झुकना पड़ा। भ्रष्टाचार का मुद्दा अमीर और गरीब दोनों को जोड़ता है, लेकिन भ्रष्टाचार का स्रोत गरीब जनता नहीं है। गरीबों को व्यवस्था से दूर करने में भ्रष्टाचार की भूमिका है। आज़ादी के २७ साल बाद जब लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने अपने आंदोलन की शुरुआत की थी तब उसके मूल में भी गांधी विचार था। जब अन्ना हजारे ने भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ मोर्चा खोका तब भी उन्होंने गांधी विचार का ही आश्रय लिया। गांधी विचार अमीर-गरीब सभी को जोड़ लेता है, जबकि हिंसक क्रांति में ऐसा संभव नहीं हो पाता। जनचेतना का फायदा व्यवस्था को भी मिलता है। भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी को लेकर लोग १९७४ में भी सड़कों पर निकले थे। उस समय भी सत्ता परिवर्तन का नारा दिया गया था। उस समय आंदोलनकारियों को विपक्ष के साथ-साथ अनेक संगठनों का समर्थन हासिल था। लेकिन इस बात को हम सभी जानते हैं कि मूल्यों में कितना परिवर्तन हुआ। मूल्यपरक व्यवस्था को जन्म दे सकने वाली दृष्टि गांधी विचार में है।

अन्ना हजारे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अन्ना हजारे का जन्म १५ जून १९३७ को महाराष्ट्र के अहमदनगर के भिंगार गांव के एक मराठा किसान परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम बाबूराव हजारे और मां का नाम लक्ष्मीबाई हजारे था। उनका बचपन बहुत गरीबी में गुजरा। पिता मजदूर थे तथा दादा सेना में थे। दादा की तैनाती भिंगनगर में थी। वैसे अन्ना के पूर्वजों का गांव अहमदनगर जिले में ही स्थित रालेगन सिद्धि था। दादा की मृत्यु के सात वर्षों बाद अन्ना का परिवार रालेगन आ गया। अन्ना के छह भाई हैं। परिवार में तंगी का आलम देखकर अन्ना की बुआ उन्हें मुम्बई ले गईं। वहां उन्होंने सातवीं तक पढ़ाई की। परिवार पर कष्टों का बोझ देखकर वे दादर स्टेशन के बाहर

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

एक फूल बेचनेवाले की दुकान में 40 रुपये के वेतन पर काम करने लगे। इसके बाद उन्होंने फूलों की अपनी दुकान खोल ली और अपने दो भाइयों को भी रालेगन से बुला लिया।

व्यवसाय

वर्ष १९६२ में भारत.चीन युद्ध के बाद सरकार की युवाओं से सेना में शामिल होने की अपील पर अन्ना १९६३ में सेना की मराठा रेजीमेंट में ड्राइवर के रूप में भर्ती हो गए। अन्ना की पहली नियुक्ति पंजाब में हुई। १९६५ में भारत.पाकिस्तान युद्ध के दौरान अन्ना हजारे खेमकरण सीमा पर नियुक्त थे। १२ नवंबर १९६५ को चौकी पर पाकिस्तानी हवाई बमबारी में वहां तैनात सारे सैनिक मारे गए। इस घटना ने अन्ना के जीवन को सदा के लिए बदल दिया। इसके बाद उन्होंने सेना में १३ वर्षों तक काम किया। उनकी तैनाती मुंबई और कश्मीर में भी हुई। १९७५ में जम्मू में तैनाती के दौरान सेना में सेवा के १५ वर्ष पूरे होने पर उन्होंने स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति ले ली। वे पास के गाँव रालेगन सिद्धि में रहने लगे और इसी गाँव को उन्होंने अपनी सामाजिक कर्मस्थली बनाकर समाज सेवा में जुट गए।

सामाजिक कार्य

१९६५ के युद्ध में मौत से साक्षात्कार के बाद नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर उन्होंने स्वामी विवेकानंद की एक पुस्तक कॉल टु दि यूथ फॉर नेशन खरीदी। इसे पढ़कर उनके मन में भी अपना जीवन समाज को समर्पित करने की इच्छा बलवती हो गई। उन्होंने महात्मा गांधी और विनोबा भावे की पुस्तकें भी पढ़ीं। १९७० में उन्होंने आजीवन अविवाहित रहकर स्वयं को सामाजिक कार्यों के लिए पूर्णतः समर्पित कर देने का संकल्प कर लिया।

रालेगन सिद्ध

मुम्बई पदस्थापन के दौरान वह अपने गांव रालेगन आते-जाते रहे। वे वहाँ चट्टान पर बैठकर गांव को सुधारने की बात सोचा करते थे। १९७८ में स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर रालेगन आकर उन्होंने अपना सामाजिक कार्य प्रारंभ कर दिया। इस गांव में बिजली और पानी की जबरदस्त कमी थी। अन्ना ने गांव वालों को नहर बनाने और गड्ढे खोदकर बारिश का पानी इकट्ठा करने के लिए प्रेरित किया और स्वयं भी इसमें योगदान दिया। अन्ना के कहने पर गांव में जगह-जगह पेड़ लगाए गए। गांव में सौर ऊर्जा और गोबर गैस के जरिए बिजली की सप्लाई की गई। उन्होंने अपनी जमीन बच्चों के हॉस्टल के लिए दान कर दी और अपनी पेंशन का सारा पैसा गांव के विकास के लिए समर्पित कर दिया। वे गांव के मंदिर में रहते हैं और हॉस्टल में रहने वाले बच्चों के लिए बनने वाला खाना ही खाते हैं। आज गांव का हर शख्स आत्मनिर्भर है। आस-पड़ोस के गांवों के लिए भी यहां से चारा ,दूध आदि जाता है। यह गांव आज शांति सौहार्द्र एवं भाईचारे की मिसाल है।

महाराष्ट्र भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन 1991

१९९१ में अन्ना हजारे ने महाराष्ट्र में शिवसेना.भाजपा की सरकार के कुछ भ्रष्ट मंत्रियों को हटाए जाने की मांग को लेकर भूख हड़ताल की। ये मंत्री थे. शशिकांत सुतर महादेव शिवांकर और बबन घोलप। अन्ना ने उन पर आय से अधिक संपत्ति रखने का आरोप लगाया था। सरकार ने उन्हें मनाने की बहुत कोशिश की। लेकिन अंततः उसे दागी मंत्रियों शशिकांत सुतर और महादेव शिवांकर को हटाना ही पड़ा।, घोलप ने अन्ना के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर दिया। अन्ना अपने आरोप के समर्थन में न्यायालय में कोई साक्ष्य पेश नहीं कर पाए और उन्हें तीन महीने की जेल हो गई। तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर जोशी ने उन्हें एक दिन की हिरासत के बाद छोड़ दिया। एक जाँच आयोग ने शशिकांत सुतर और महादेव शिवांकर को निर्दोष बताया। लेकिन अन्ना हजारे ने कई शिवसेना और भाजपा नेताओं पर भी भ्रष्टाचार में लिप्त होने के आरोप लगाए।

सूचना का अधिकार आंदोलन १९९७-२००५

अन्ना हजारे ने सूचना का अधिकार अधिनियम के समर्थन में मुंबई के आजाद मैदान से अपना अभियान शुरु किया। ९ अगस्त २००३ को मुंबई के आजाद मैदान में ही अन्ना हजारे आमरण अनशन पर बैठ गए। १२ दिन तक चले आमरण अनशन के दौरान अन्ना हजारे और सूचना का अधिकार आंदोलन को देशव्यापी समर्थन

मिला। आखिरकार २००३ में ही महाराष्ट्र सरकार को इस अधिनियम के एक मजबूत और कड़े विधेयक को पारित करना पड़ा। बाद में इसी आंदोलन ने राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले लिया। इसके परिणामस्वरूप १२ अक्टूबर २००५ को भारतीय संसद ने भी सूचना का अधिकार अधिनियम पारित किया। अगस्त २००६ में सूचना का अधिकार अधिनियम में संशोधन प्रस्ताव के खिलाफ अन्ना ने ११ दिन तक आमरण अनशन कियाए जिसे देशभर में समर्थन मिला। इसके परिणामस्वरूप सरकार ने संशोधन का इरादा बदल दिया।

महाराष्ट्र भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन २००३

सन २००३ में अन्ना ने कांग्रेस और एनसीपी सरकार के चार मंत्रियों सुरेश दादा जैन ,नवाब मलिक, विजय कुमार गावित और पद्मसिंह पाटिल को भ्रष्ट बताकर उनके खिलाफ मुहिम छेड़ दी और भूख हड़ताल पर बैठ गए। तत्कालीन महाराष्ट्र सरकार ने इसके बाद एक जांच आयोग का गठन किया। नवाब मलिक ने भी अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। आयोग ने जब सुरेश जैन के खिलाफ आरोप तय किए तो उन्हें भी त्यागपत्र देना पड़ा।

लोकपाल विधेयक आंदोलन

जन लोकपाल विधेयक एवं नागरिक लोकपाल विधेयक के निर्माण के लिए जारी यह आंदोलन अपने अखिल भारतीय स्वरूप में ५ अप्रैल २०११ को समाजसेवी अन्ना हजारे एवं उनके साथियों के जंतर-मंतर पर शुरु किए गए अनशन के साथ आरंभ हुआ। जिनमें मैग्सेसे पुरस्कार विजेता अरविंद केजरीवाल, भारत की पहली महिला प्रशासनिक अधिकारी किरण बेदी, प्रसिद्ध लोकधर्मी वकील प्रशांत भूषण आदि शामिल थे। संचार साधनों के प्रभाव के कारण इस अनशन का प्रभाव समूचे भारत में फैल गया और इसके समर्थन में लोग सड़कों पर भी उतरने लगे। इन्होंने भारत सरकार से एक मजबूत भ्रष्टाचार विरोधी लोकपाल विधेयक बनाने की माँग की थी और अपनी माँग के अनुरूप सरकार को लोकपाल बिल का एक मसौदा भी दिया था। किंतु मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली तत्कालीन सरकार ने इसके प्रति नकारात्मक रवैया दिखाया और इसकी उपेक्षा की। इसके परिणामस्वरूप शुरू हुए अनशन के प्रति भी उनका रवैया उपेक्षा पूर्ण ही रहा। किंतु इस अनशन के आंदोलन का रूप लेने पर भारत सरकार ने आनन-फानन में एक समिति बनाकर संभावित खतरे को टाला और १६ अगस्त तक संसद में लोकपाल विधेयक पारित कराने की बात स्वीकार कर ली। अगस्त से शुरु हुए मानसून सत्र में सरकार ने जो विधेयक प्रस्तुत किया वह कमजोर और जन लोकपाल के सर्वथा विपरीत था। अन्ना हजारे ने इसके खिलाफ अपने पूर्व घोषित तिथि १६ अगस्त से पुनः अनशन पर जाने की बात दुहराई। १६ अगस्त को सुबह साढ़े सात बजे जब वे अनशन पर जाने के लिए तैयारी कर रहे थे, उन्हें दिल्ली पुलिस ने घर से ही गिरफ्तार कर लिया। उनकी टीम के अन्य लोग भी गिरफ्तार कर लिए गए। इस खबर ने आम जनता को उद्वेलित कर दिया और वह सड़कों पर उतरकर सरकार के इस कदम का अहिंसात्मक प्रतिरोध करने लगी। दिल्ली पुलिस ने अन्ना को मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया। अन्ना ने रिहा किए जाने पर दिल्ली से बाहर रालेगाँव चले जाने या ३ दिन तक अनशन करने की बात अस्वीकार कर दी। उन्हें ७ दिनों की न्यायिक हिरासत में तिहाड़ जेल भेज दिया गया। शाम तक देशव्यापी प्रदर्शनों की खबर ने सरकार को अपना कदम वापस खींचने पर मजबूर कर दिया। दिल्ली पुलिस ने अन्ना को सशर्त रिहा करने का आदेश जारी किया। मगर अन्ना अनशन जारी रखने पर दृढ़ थे। बिना किसी शर्त के अनशन करने की अनुमति तक उन्होंने रिहा होने से इनकार कर दिया। १७ अगस्त तक देश में अन्ना के समर्थन में प्रदर्शन होता रहा। दिल्ली में तिहाड़ जेल के बाहर हजारों लोग डेरा डाले रहे। १७ अगस्त की शाम तक दिल्ली पुलिस रामलीला मैदान में और ७ दिनों तक अनशन करने की इजाजत देने को तैयार हुई। मगर अन्ना ने ३० दिनों से कम अनशन करने की अनुमति लेने से मना कर दिया। उन्होंने जेल में ही अपना अनशन जारी रखा। अन्ना को रामलीला मैदान में १५ दिन की अनुमति मिली। उनका कहना था कि तमाम सरकारी कर्मचारियों को लोकपाल के दायरे में लाया जाए, तमाम सरकारी कार्यालयों में एक नागरिक चार्टर लगाया जाए और सभी राज्यों में लोकायुक्त हो।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने दोनो पक्षों के बीच जारी गतिरोध को तोड़ने की दिशा में पहली ठोस पहल करते हुए लोकसभा में खुली पेशकश की कि संसद अरूणा राय और डॉ. जयप्रकाश नारायण सहित अन्य लोगों द्वारा पेश विधेयकों के साथ जन लोकपाल विधेयक पर भी विचार करेगी। उसके बाद विचार-विमर्श का ब्यौरा स्थायी समिति को भेजा जाएगा। 25 मई २०१२ को अन्ना हजारे ने पुनः जंतर-मंतर पर जन लोकपाल विधेयक और विसल ब्लोअर विधेयक को लेकर एक दिन का सांकेतिक अनशन किया।

गांधी विचार और अन्ना का आन्दोलन

महात्मा गाँधी के बाद अन्ना हजारे ने ही भूख हड़ताल और आमरण अनशन को सबसे ज्यादा बार बतौर हथियार इस्तेमाल किया है। इसके जरिए उन्होंने भ्रष्ट प्रशासन को पद छोड़ने एवं सरकारों को जनहितकारी कानून बनाने पर मजबूर किया है। अन्ना हजारे को आधुनिक युग का गाँधी भी कहा जा सकता है। अन्ना हजारे गाँधीजी के ग्राम स्वराज्य को भारत के गाँवों की समृद्धि का माध्यम मानते हैं। उनका मानना है कि बलशाली भारत के लिए गाँवों को अपने पैरों पर खड़ा करना होगा। उनके अनुसार विकास का लाभ समान रूप से वितरित न हो पाने का कारण रहा गाँवों को केन्द्र में न रखना। व्यक्ति निर्माण से ग्राम निर्माण और तब स्वाभाविक ही देश निर्माण के गाँधीजी के मन्त्र को उन्होंने हकीकत में उतार कर दिखाया और एक गाँव से आरम्भ उनका यह अभियान आज 85 गाँवों तक सफलतापूर्वक जारी है। व्यक्ति निर्माण के लिए मूल मन्त्र देते हुए उन्होंने युवाओं में उत्तम चरित्र, शुद्ध आचार- विचार, निष्कलंक जीवन व त्याग की भावना विकसित करने व निर्भयता को आत्मसात कर आम आदमी की सेवा को आदर्श के रूप में स्वीकार करने का आह्वान किया।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के अहिंसा के विचार को पूरी तरह आत्मसात कर अन्ना हजारे ने समाज को जाग्रत करने के लिए अनेक आन्दोलनों का नेतृत्व किया। उनके आंदोलनों में उपवास की शक्ति मुख्य है। यद्यपि गांधी जी ने उपवास को अंतिम अस्त्र माना है, लेकिन जब अपने ही लोगों के विरोध में खड़े होना हो तो अहिंसक हथियार के रूप में उपवास ही विकल्प नजर आता है। अन्ना ने अपने जनआंदोलनों से देश की राजनीति पर दूरगामी प्रभाव डाला है। उसने देश की जनता में यह विश्वास जाग्रत किया है कि अकेले के दम पर सरकार को हिलाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 भारतीय अर्थतंत्र निशाने पर - लेखक -मुद्राराक्षस,प्रथम संस्करण 2012,गौतम बुक सेंटर दिल्ली

2 गांधी, अंबेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ - डॉ.रामविलास शर्मा, प्रथम संस्करण 2000, 2008, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली

3 गांधी की दृष्टि - दादा धर्माधिकारी ,संस्करण:2006,सर्व सेवा संघ -प्रकाशन

4 जयप्रकाश नारायण की राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना - विमल प्रसाद सिंह प्रथम संस्करण 2006,

5 शिक्षा क्या है - जे.कृष्णमूर्ति,संस्करण -2008, राजपाल एन्ड सन्ज ,कश्मीरी गेट ,दिल्ली- 110006

6 अण्णा हजारे का भ्रष्टाचार -विरोधी धर्मयुद्ध:-राम पुनियानी,उद्भावना प्रकाशन, संस्करण - जुलाई 2012,

7 फिर से हिन्द स्वराज - कनक तिवारी ,मेघा बुक प्रकाषक ,प्रथम संस्करण 2009

8 अन्ना हजारे, गांधी बेवसाइट ऑनलाइन।